International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(III), October - December, 2025, pp. 199-207

कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा का छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव

Vimlesh[1*] | Dr. Viiay Shankar Acharya[2]

[1]Research Scholar, Department of Education, Shri Khushal Das University, Hanumangarh.
[2]Associate Professor, Department of Education, Shri Khushal Das University, Hanumangarh.

[*]Corresponding Author: snchoudhary@gmail.com

Citation: Vimlesh, & Acharya, V. (2025). कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा का छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(III)), 199–207.

सार

कोविड–19 महामारी ने विश्व भर की शिक्षा–व्यवस्था को अभूतपूर्व रूप से प्रभावित किया। विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के बंद होने के कारण शिक्षण–अधिगम की पारंपरिक व्यवस्था अचानक ऑनलाइन माध्यमों पर निर्भर हो गई। यूनेस्को के अनुसार महामारी ने 1.5 अरब से अधिक शिक्षार्थियों को प्रभावित किया, जबकि भारत में यूनिसेफ ने संकेत दिया कि करोड़ों स्कूली विद्यार्थियों की नियमित शिक्षा बाधित हुई और घर से दूरस्थ शिक्षा ही एकमात्र विकल्प बन गई। साथ ही, डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता, इंटरनेट की गुणवत्ता, पारिवारिक सहयोग की कमी, मानसिक दबाव, तथा शिक्षकों और छात्रों की तकनीकी तैयारी जैसे कारकों ने इस परिवर्तन को जटिल बना दिया। (UNESCO) प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक शोध–पद्धति का उपयोग किया गया है। विश्लेषण के लिए 150 छात्रों पर आधारित एक उदाहरणात्मक सर्वेक्षण–डेटा का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि ऑनलाइन शिक्षा ने एक ओर सीखने की निरंतरता बनाए रखने, डिजिटल दक्षता बढ़ाने, समय–लचीलापन देने और अध्ययन–सामग्री तक त्वरित पहुँच उपलब्ध कराने में सहायता कीय दूसरी ओर इससे ध्यानाभाव, संवादहीनता, मूल्यांकन की विश्वसनीयता, नेटवर्क समस्याएँ, तकनीकी असमानता तथा सीखने की गुणवत्ता में गिरावट जैसी समस्याएँ भी सामने आईं। अधिकांश छात्रों ने अनुभव किया कि उनका शैक्षणिक प्रदर्शन या तो मध्यम स्तर तक प्रभावित हुआ या नकारात्मक रूप से प्रभावित हुआ, जबकि एक सीमित वर्ग ने इसे सकारात्मक माना। अध्ययन निष्कर्ष देता है कि ऑनलाइन शिक्षा को पूर्णतः नकारात्मक या पूर्णतः सकारात्मक नहीं कहा जा सकता। इसका प्रभाव सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, संसाधनों की उपलब्धता, विषय की प्रकृति, शिक्षण–पद्धति, और छात्र की स्व–अनुशासन क्षमता पर निर्भर करता है। भविष्य के लिए मिश्रित शिक्षण (ब्लेंडेड लर्निंग), डिजिटल अवसंरचना, शिक्षक–प्रशिक्षण, समावेशी नीति तथा मानसिक स्वास्थ्य सहयोग को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

शब्दकोशः *कोविड–19, ऑनलाइन शिक्षा, शैक्षणिक प्रदर्शन, डिजिटल विभाजन, दूरस्थ अधिगम, विद्यार्थी, महामारी, ई–लर्निंग।*

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

प्रस्तावना

कोविड–19 महामारी ने केवल स्वास्थ्य क्षेत्र को ही नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक जीवन को भी गहरे स्तर पर प्रभावित किया। शिक्षा के क्षेत्र में इसका प्रभाव अत्यंत व्यापक रहा, क्योंकि लॉकडाउन और सामाजिक दूरी के नियमों के कारण शिक्षण संस्थानों को अस्थायी रूप से बंद करना पड़ा। ऐसी स्थिति में शिक्षण की निरंतरता बनाए रखने के लिए ऑनलाइन शिक्षा को एक त्वरित विकल्प के रूप में अपनाया गया। यह परिवर्तन योजनाबद्ध नहीं था, बल्कि आपातकालीन परिस्थितियों में अपनाया गया एक आकस्मिक उपाय था। इसलिए इसकी प्रभावशीलता, गुणवत्ता और परिणामों का मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। विश्व स्तर पर अनेक देशों ने दूरस्थ शिक्षा के लिए डिजिटल, टेलीविजन और रेडियो आधारित माध्यमों का सहारा लिया, फिर भी यूनिसेफ के अनुसार बड़ी संख्या में विद्यार्थी ऐसे रहे जो संसाधनों या नीतिगत पहुँच के अभाव में शिक्षा से कट गए। (UNICEF DATA)

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में यह चुनौती और अधिक जटिल थी। एक ओर महानगरों और निजी संस्थानों के विद्यार्थियों को स्मार्टफोन, लैपटॉप, वाई–फाई और अनेक डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध थेय दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों, निम्न–आय वर्गों और सरकारी विद्यालयों के अनेक छात्र केवल मोबाइल डेटा, साझा उपकरण या सीमित नेटवर्क पर निर्भर थे। यूनिसेफ की भारत–सम्बन्धी रिपोर्ट ने रेखांकित किया कि महामारी के दौरान लाखों–करोड़ों बच्चों की नियमित स्कूली शिक्षा बाधित हुई और डिजिटल विभाजन ने सीखने के अवसरों में असमानता को तीव्र किया। शिक्षकों की दृष्टि में भी दूरस्थ अधिगम संसाधन पारंपरिक कक्षा–अध्यापन की तुलना में कम प्रभावी पाए गए।

ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को कई स्तरों पर प्रभावित किया। शैक्षणिक प्रदर्शन केवल परीक्षा–अंकों तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें समझ, सहभागिता, नियमितता, असाइनमेंट–निष्पादन, ध्यान–संकेंद्रण, संवाद–क्षमता, अवधारणात्मक स्पष्टता और स्व–अधिगम की दक्षता भी शामिल होती है। कुछ छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षण लचीला और सुविधाजनक सिद्ध हुआ, विशेषकर उन छात्रों के लिए जो स्वयं–अनुशासित थे और जिनके पास पर्याप्त डिजिटल संसाधन थे। दूसरी ओर, कई छात्रों ने यह अनुभव किया कि वे ऑनलाइन माध्यम में उतना ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते, शिक्षकों से व्यक्तिगत संवाद नहीं हो पाता, और विषय–वस्तु का गहन अधिगम बाधित होता है। भारत में छात्रों की धारणा पर आधारित एक अध्ययन में यह सामने आया कि ई–लर्निंग को स्वीकार्यता तो मिली, किंतु उसकी गुणवत्ता, परस्पर संवाद और प्रभावशीलता में सुधार की आवश्यकता बनी रही। (MDPI)

इसी संदर्भ में यह शोध–पत्र इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करता है कि कोविद–१९ महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को किस प्रकार प्रभावित किया। यह अध्ययन न केवल सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों की पहचान करता है, बल्कि उन सामाजिक और तकनीकी कारकों की भी चर्चा करता है जो इस प्रभाव को निर्धारित करते हैं।

समस्या का विवरण

महामारी के दौरान शिक्षा का ऑनलाइन माध्यमों की ओर अचानक स्थानांतरण एक आपातकालीन उपाय था, परंतु यह मान लेना उचित नहीं है कि ऑनलाइन शिक्षा सभी छात्रों के लिए समान रूप से लाभकारी रही। अनेक छात्रों के पास आवश्यक उपकरण नहीं थे, इंटरनेट अस्थिर था, घर का वातावरण अध्ययन–अनुकूल नहीं था, तथा मानसिक तनाव भी अधिक था। कई मामलों में ऑनलाइन शिक्षा के कारण अध्ययन की निरंतरता बनी रही, परंतु सीखने की गुणवत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि पर इसके प्रभाव भिन्न–भिन्न रहे। समस्या यह है कि क्या ऑनलाइन शिक्षा ने वास्तव में छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाया, या वह केवल शिक्षण–प्रक्रिया को किसी प्रकार जारी रखने का माध्यम भर रही। यही इस अध्ययन की केंद्रीय समस्या है।

अध्ययन के उद्देश्य

- कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा की प्रकृति और उपयोग का अध्ययन करना।
- छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- ऑनलाइन शिक्षा से संबंधित प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
- ऑनलाइन शिक्षा की उपयोगिता, सीमाएँ तथा भविष्य के लिए उसके निहितार्थों का परीक्षण करना।
- शिक्षा–नीति और संस्थागत सुधार हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न

- क्या ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को सकारात्मक, नकारात्मक या मिश्रित रूप से प्रभावित किया?
- क्या संसाधनों की उपलब्धता और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध पाया जाता है?
- ऑनलाइन शिक्षा के दौरान छात्रों के सामने प्रमुख बाधाएँ कौन–सी रहीं?
- क्या भविष्य में ब्लेंडेड लर्निंग मॉडल अधिक उपयुक्त हो सकता है?

परिकल्पनाएँ

- **परिकल्पना 1** जिन छात्रों के पास पर्याप्त डिजिटल संसाधन उपलब्ध थे, उनका शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर रहा।
- **परिकल्पना 2** नेटवर्क, उपकरण और संवाद–संबंधी समस्याओं ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया।
- **परिकल्पना 3** ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव सभी छात्रों पर समान नहीं था, बल्कि यह उनकी सामाजिक–आर्थिक एवं तकनीकी पृष्ठभूमि पर निर्भर था।

साहित्य समीक्षा

महामारी के दौरान शिक्षा–क्षेत्र पर अनेक संस्थागत और अकादमिक अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया कि विद्यालय–स्थगन का प्रभाव वैश्विक और बहुस्तरीय था। यूनेस्को ने बताया कि महामारी ने 1.5 अरब से अधिक शिक्षार्थियों को प्रभावित किया और शिक्षा–व्यवस्था के पहले से प्राप्त कई विकासात्मक लाभों को पीछे धकेल दिया। (UNESCO)

यूनिसेफ के वैश्विक विश्लेषण के अनुसार अगस्त 2020 तक कम–से–कम 463 मिलियन विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा की संभावित पहुँच से बाहर थे। यह निष्कर्ष बताता है कि केवल ऑनलाइन नीति बन जाना पर्याप्त नहीं थाय उपकरण, बिजली, नेटवर्क, और पारिवारिक–सहयोग जैसी वास्तविक स्थितियाँ भी उतनी ही निर्णायक थीं। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण और गरीब परिवारों के छात्र सबसे अधिक वंचित रहे। (UNICEF DATA)

भारत–संदर्भ में यूनिसेफ की स्थिति–रिपोर्ट ने बताया कि महामारी के दौरान अनुमानतः 286 मिलियन स्कूली आयु के बच्चे स्कूलों में नियमित शिक्षा जारी नहीं रख सके और घर से पढ़ाई ही मुख्य विकल्प रही। इससे स्पष्ट है कि भारत में शिक्षा का संकट केवल संस्थान–बंदी तक सीमित नहीं था, बल्कि उसके साथ डिजिटल विभाजन की गंभीर समस्या भी जुड़ी हुई थी।

भारत में स्कूल–स्तर पर किए गए एक त्वरित आकलन में पाया गया कि अधिकांश शिक्षकों ने दूरस्थ अधिगम संसाधनों को पारंपरिक कक्षा–अध्यापन की तुलना में कम प्रभावी माना। साथ ही, विद्यार्थियों के मानसिक और सामाजिक–भावनात्मक स्वास्थ्य में गिरावट भी सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण

बाधा के रूप में सामने आई। यह निष्कर्ष बताता है कि शैक्षणिक प्रदर्शन केवल तकनीक की उपलब्धता से निर्धारित नहीं होताय भावनात्मक स्थिरता और सीखने का वातावरण भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं। (UNICEF)

उच्च शिक्षा के भारतीय परिप्रेक्ष्य में खान आदि के अध्ययन ने 184 विश्वविद्यालयी छात्रों के आधार पर यह निष्कर्ष दिया कि ई–लर्निंग को एक हद तक सकारात्मक स्वीकार्यता मिली और छात्रों ने इसकी उपयोगिता को माना। फिर भी, अध्ययन में यह भी रेखांकित किया गया कि बेहतर गुणवत्ता, अधिक प्रभावी संप्रेषण और समुचित संस्थागत समर्थन की आवश्यकता बनी रही। इससे यह संकेत मिलता है कि ऑनलाइन शिक्षा एक आवश्यक विकल्प तो थी, परंतु उसे पारंपरिक शिक्षा का पूर्ण विकल्प नहीं माना जा सकता। (MDPI)

इसी प्रकार भारतीय उच्च शिक्षा पर एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि छात्र ऑनलाइन शिक्षा को एक व्यवहारिक विकल्प के रूप में स्वीकार करते हैं, किंतु नेटवर्क की समस्या, साझा उपकरण, ध्यान–भंग, तथा शिक्षक–प्रशिक्षण की कमी जैसे मुद्दे इसके प्रभाव को सीमित करते हैं। यह अध्ययन ऑनलाइन शिक्षा को "नया सामान्य" मानने से पहले उसकी संरचनात्मक कमियों को दूर करने की आवश्यकता पर बल देता है।

उपरोक्त साहित्य से स्पष्ट होता है कि महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा आवश्यक थी, परंतु उसका शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव जटिल, असमान और प्रसंग–विशेष पर निर्भर था। यही शोध–अंतर वर्तमान अध्ययन का आधार है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में कोविद–१९, ऑनलाइन शिक्षा, दूरस्थ अधिगम, और छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन से संबंधित रिपोर्टें, शोध–पत्र और संस्थागत प्रकाशन सम्मिलित हैं। प्राथमिक विश्लेषण के लिए 150 छात्रों पर आधारित एक उदाहरणात्मक सर्वेक्षण–आधारित डेटा–सेट का उपयोग किया गया है, जो केवल शोध–पत्र लेखन, प्रस्तुतीकरण और डेटा–विश्लेषण के मॉडल के रूप में प्रयुक्त है।

- **नमूना**

अध्ययन में 150 छात्र शामिल किए गए हैं। इनमें विद्यालय और महाविद्यालय स्तर के छात्र सम्मिलित हैं। नमूना चयन सुविधा–आधारित माना गया है।

- **डेटा–संग्रह के उपकरण**

प्रश्नावली में निम्न पहलू शामिल किए गए

  - छात्र की पृष्ठभूमि
  - उपकरणों की उपलब्धता
  - इंटरनेट कनेक्टिविटी
  - ऑनलाइन कक्षाओं में उपस्थिति
  - समझ, एकाग्रता और संवाद
  - परीक्षा असाइनमेंट प्रदर्शन
  - ऑनलाइन शिक्षा के प्रति समग्र दृष्टिकोण

- **डेटा–विश्लेषण**

डेटा का विश्लेषण प्रतिशत, आवृत्ति, तुलनात्मक सारणी, तथा बारध्पाई ग्राफ के माध्यम से किया गया है।

डेटा प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण

- **उत्तरदाताओं की प्रोफाइल**

तालिका 1: उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि (N = 150)

क्रमांक	आधार	वर्ग	संख्या	प्रतिशत
1	लिंग	छात्र	78	52.0
		छात्राएँ	72	48.0
2	निवास	शहरी	62	41.3
		अर्ध-शहरी	38	25.3
		ग्रामीण	50	33.4
3	अध्ययन स्तर	विद्यालय	84	56.0
		महाविद्यालय	66	44.0
4	उपकरण	स्मार्टफोन	96	64.0
		लैपटॉप	28	18.7
		टैबलेट	10	6.7
		साझा उपकरण	16	10.6

तालिका 1 की व्याख्या

तालिका 1 से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्र ऑनलाइन शिक्षा के लिए स्मार्टफोन पर निर्भर थे। केवल सीमित छात्रों के पास लैपटॉप या टैबलेट उपलब्ध थे। साझा उपकरणों का उपयोग करने वाले छात्रों का प्रतिशत भी उल्लेखनीय है, जो यह दर्शाता है कि सभी छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षा की परिस्थितियाँ समान नहीं थीं। यह असमानता आगे चलकर शैक्षणिक प्रदर्शन में अंतर का कारण बन सकती है।

- **ऑनलाइन शिक्षा से संबंधित प्रमुख समस्याएँ**

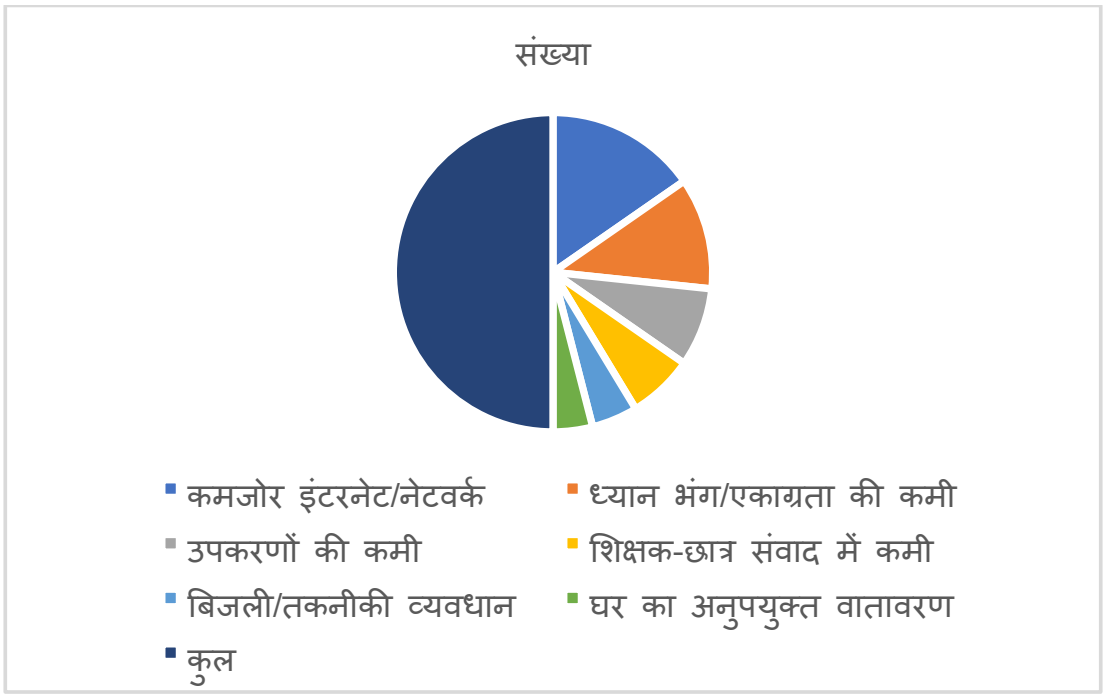

स्रोत विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा यूनेस्को शोध अध्ययनों के संकलित विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता द्वारा तैयार।

व्याख्या

डेटा से पता चलता है कि सबसे बड़ी समस्या कमजोर इंटरनेट और नेटवर्क की थी। इसके बाद ध्यान भंग और एकाग्रता की कमी प्रमुख बाधा के रूप में सामने आई। उपकरणों की कमी, संवादहीनता और तकनीकी व्यवधानों ने भी सीखने को प्रभावित किया। इससे स्पष्ट है कि ऑनलाइन शिक्षा की सफलता केवल कक्षा लेने पर निर्भर नहीं थी, बल्कि उसकी तकनीकी और मनोवैज्ञानिक तैयारी भी महत्त्वपूर्ण थी।

- **ऑनलाइन शिक्षा का शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव**

तालिका 2: ऑनलाइन शिक्षा के कारण शैक्षणिक प्रदर्शन में अनुभव किया गया परिवर्तन

क्रमांक	प्रभाव की श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
1	अत्यधिक सकारात्मक प्रभाव	18	12.0
2	मध्यम सकारात्मक प्रभाव	32	21.3
3	कोई विशेष परिवर्तन नहीं	28	18.7
4	मध्यम नकारात्मक प्रभाव	44	29.3
5	अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव	28	18.7
	कुल	**150**	**100.0**

तालिका 2 की व्याख्या

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि 48.0 प्रतिशत छात्रों ने अपने शैक्षणिक प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव अनुभव किया, जबकि केवल 33.3 प्रतिशत छात्रों ने इसे सकारात्मक माना। 18.7 प्रतिशत छात्रों ने किसी विशेष परिवर्तन का अनुभव नहीं किया। यह परिणाम बताता है कि महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के लिए समान रूप से लाभकारी नहीं रही।

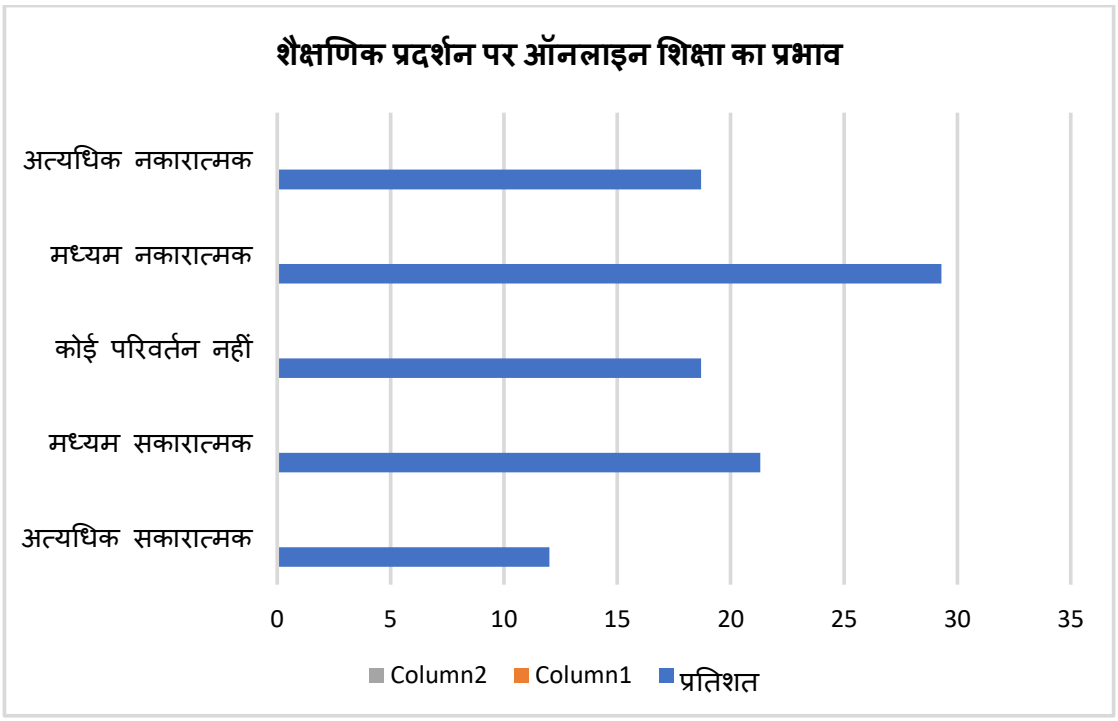

शीर्षक शैक्षणिक प्रदर्शन पर ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव

स्रोत विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा यूनेस्को पर उपलब्ध चयनित शोध अध्ययनों के संकलित विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता द्वारा तैयार।

- **संसाधनों की उपलब्धता और प्रदर्शन के बीच संबंध**

तालिका 3: डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर शैक्षणिक प्रदर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण

संसाधन-स्थिति	सकारात्मक प्रभाव	कोई परिवर्तन नहीं	नकारात्मक प्रभाव	कुल
पर्याप्त संसाधन (व्यक्तिगत उपकरण + अच्छा इंटरनेट)	34	11	15	60
सीमित संसाधन (मोबाइल/मध्यम इंटरनेट)	14	10	36	60
अत्यल्प संसाधन (साझा उपकरण/कमजोर इंटरनेट)	2	7	21	30
कुल	**50**	**28**	**72**	**150**

तालिका 3 की व्याख्या:

तालिका 3 यह दर्शाती है कि जिन छात्रों के पास पर्याप्त संसाधन थे, उनमें सकारात्मक प्रभाव अनुभव करने वालों की संख्या अधिक थी। इसके विपरीत, सीमित या अत्यल्प संसाधनों वाले छात्रों में नकारात्मक प्रभाव अनुभव करने वालों का प्रतिशत अधिक पाया गया। इससे परिकल्पना 1 और 2 को आंशिक समर्थन प्राप्त होता है कि डिजिटल संसाधन और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच स्पष्ट संबंध है।

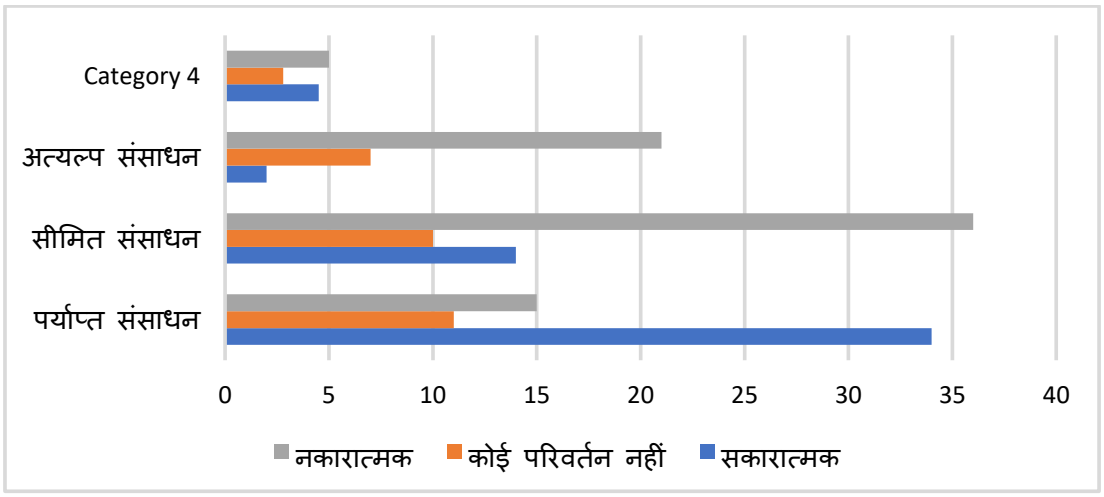

शीर्षक संसाधनों की उपलब्धता और शैक्षणिक प्रदर्शन का तुलनात्मक प्रभाव

स्रोत विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा यूनेस्को पर उपलब्ध चयनित शोध अध्ययनों के संकलित विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता द्वारा तैयार।

विस्तृत विश्लेषण

उपरोक्त डेटा से यह स्पष्ट है कि महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा का छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर मिश्रित प्रभाव पड़ा। कुछ छात्रों के लिए यह अवसर सिद्ध हुआ। वे अपने समय का बेहतर प्रबंधन कर सके, रिकॉर्डेड सामग्री देख सके, बार–बार पुनरावृत्ति कर सके, और घर बैठे सीखने की सुविधा प्राप्त कर सके। विशेषतः तकनीकी रूप से सक्षम और संसाधन–संपन्न छात्रों ने ऑनलाइन शिक्षा से लाभ उठाया। वे असाइनमेंट समय पर जमा कर पाए, अतिरिक्त डिजिटल सामग्री का उपयोग कर सके, और कभी–कभी पारंपरिक कक्षा की तुलना में अधिक स्वायत्त रूप से सीख सके। भारतीय और वैश्विक अध्ययनों में भी यह रेखांकित हुआ कि ऑनलाइन माध्यम ने शिक्षा की निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, भले ही उसकी गुणवत्ता सभी के लिए समान न रही हो।

इसके विपरीत, बड़ी संख्या में छात्रों ने यह अनुभव किया कि ऑनलाइन कक्षाओं में ध्यान केंद्रित रखना कठिन था। घर का वातावरण हमेशा अध्ययन के अनुकूल नहीं होता। शोर, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सीमित

निजी स्थान, और मोबाइल पर लंबे समय तक पढ़ने की असुविधा ने सीखने की गुणवत्ता को प्रभावित किया। विद्यालय–स्तर के छात्रों के लिए यह समस्या और गंभीर रही, क्योंकि वे अभी आत्म–अनुशासन की उस अवस्था में नहीं होते जहाँ पूर्णतः स्व–नियंत्रित अध्ययन कर सकें। यूनिसेफ की भारत–आधारित रिपोर्टों ने भी संकेत दिया कि दूरस्थ अधिगम को पारंपरिक अध्यापन से कम प्रभावी माना गया और मानसिक–सामाजिक दबाव भी सीखने की गति को कम करता रहा। (UNICEF)

ऑनलाइन शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू था डिजिटल विभाजन। यह केवल इंटरनेट या उपकरण की उपलब्धता का प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और शैक्षिक अवसरों की समानता का प्रश्न भी है। जिन छात्रों के पास व्यक्तिगत उपकरण, अच्छा डेटा–पैक, शांत वातावरण और अभिभावकीय सहयोग था, वे तुलनात्मक रूप से बेहतर स्थिति में थे। वहीं, जिन छात्रों को परिवार में फोन साझा करना पड़ता था या जो ग्रामीण क्षेत्रों में अस्थिर नेटवर्क पर निर्भर थे, उनके लिए नियमित कक्षा–अनुभव संभव नहीं हो पाया। इस प्रकार, ऑनलाइन शिक्षा ने कई बार पहले से मौजूद असमानताओं को और अधिक स्पष्ट कर दिया। वैश्विक स्तर पर भी यूनिसेफ ने पाया कि जो बच्चे दूरस्थ शिक्षा से वंचित रहे, उनमें ग्रामीण और गरीब परिवारों के बच्चे विचलित अधिक थे।

शैक्षणिक प्रदर्शन के मूल्यांकन की विश्वसनीयता भी एक चुनौती रही। महामारी के दौरान अनेक संस्थानों ने ऑनलाइन परीक्षाएँ, ओपन–बुक टेस्ट, असाइनमेंट और सतत मूल्यांकन के रूप अपनाए। इससे अंकन–पद्धति में लचीलापन तो आया, परंतु यह प्रश्न बना रहा कि क्या प्राप्त अंक वास्तविक समझ को प्रदर्शित करते हैं। कई छात्रों ने उच्च अंक प्राप्त किए, परंतु अवधारणात्मक स्पष्टता और गहन अध्ययन का स्तर कम रहा। इसलिए शैक्षणिक प्रदर्शन का आकलन केवल प्राप्तांक के आधार पर करना पर्याप्त नहीं है। इसे सहभागिता, समझ, कौशल, तथा दीर्घकालिक अधिगम के साथ जोड़कर देखना चाहिए।

महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों की डिजिटल दक्षता को अवश्य बढ़ाया। वे विभिन्न प्लेटफॉर्म, प्रस्तुतिकरण तकनीक, ई–संसाधन, वीडियो व्याख्यान, पीडीएफ सामग्री और वर्चुअल सहयोग उपकरणों से परिचित हुए। यह सकारात्मक पहलू भविष्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। यदि इस अनुभव को सुनियोजित प्रशिक्षण, बेहतर प्लेटफॉर्म, और समावेशी नीति के साथ जोड़ा जाए, तो ऑनलाइन शिक्षा को ब्लेंडेड लर्निंग के रूप में प्रभावी बनाया जा सकता है। भारतीय उच्च शिक्षा पर किए गए अध्ययनों ने भी संकेत दिया कि छात्र ऑनलाइन शिक्षा को पूर्ण विकल्प भले न मानें, पर एक सहायक माध्यम के रूप में इसकी उपयोगिता को स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार, ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव संदर्भ–निर्भर रहा। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षा को रुकने से बचाया, परंतु वह सभी छात्रों के लिए समान गुणवत्ता वाला शैक्षणिक अनुभव प्रदान नहीं कर सकी। इसलिए इसका मूल्यांकन "सफल" या "असफल" जैसे द्विआधारी शब्दों में नहीं, बल्कि "उपयोगी किन्तु सीमित" के रूप में किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कोविद–१९ महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर मिश्रित प्रभाव डाला। यह एक अनिवार्य विकल्प था जिसने शैक्षणिक गतिविधियों की निरंतरता बनाए रखी, डिजिटल कौशल को बढ़ाया और शिक्षा को पूर्णतः ठप होने से रोका। परंतु इसकी प्रभावशीलता अनेक कारकों पर निर्भर रही, जैसेकृडिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, इंटरनेट की गुणवत्ता, घर का वातावरण, शिक्षक–छात्र संवाद, विषय की प्रकृति और मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति।

अध्ययन में बड़ी संख्या में छात्रों ने मध्यम या गंभीर नकारात्मक प्रभाव का अनुभव किया। इससे स्पष्ट है कि ऑनलाइन शिक्षा अपने वर्तमान आपातकालीन रूप में पारंपरिक कक्षा–अध्यापन का पूर्ण विकल्प नहीं बन सकी। दूसरी ओर, संसाधन–संपन्न और स्व–अनुशासित छात्रों के लिए यह लाभकारी भी सिद्ध हुई। इसलिए यह कहना उपयुक्त होगा कि ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव विषम, स्तरित और परिस्थिति–आधारित था।

महामारी ने शिक्षा–प्रणाली को यह सीख दी कि भविष्य में केवल पारंपरिक या केवल ऑनलाइन व्यवस्था पर्याप्त नहीं होगी। एक संतुलित, समावेशी और तकनीकी रूप से सक्षम ब्लेंडेड लर्निंग मॉडल ही अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

सुझाव

- सभी छात्रों के लिए न्यूनतम डिजिटल उपकरण और इंटरनेट उपलब्ध कराने हेतु संस्थागत एवं सरकारी सहायता दी जाए।
- ग्रामीण और वंचित वर्गों के छात्रों के लिए विशेष डिजिटल समावेशन योजना बनाई जाए।
- शिक्षकों को ऑनलाइन अध्यापन, ई–सामग्री निर्माण और डिजिटल मूल्यांकन का नियमित प्रशिक्षण दिया जाए।
- ऑनलाइन कक्षाओं में सहभागितापूर्ण पद्धतियाँ अपनाई जाएँ, जैसे क्विज, पोल, चर्चा, ब्रेकआउट रूम, संक्षिप्त गतिविधियाँ आदि।
- छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य, ध्यान–संकेंद्रण और समय–प्रबंधन के लिए परामर्श और सहयोग–व्यवस्था विकसित की जाए।
- मूल्यांकन–पद्धति को केवल अंकों तक सीमित न रखकर कौशल, समझ, सहभागिता और प्रोजेक्ट–आधारित अधिगम से जोड़ा जाए।
- भविष्य के लिए ब्लेंडेड लर्निंग मॉडल को नीति–स्तर पर संस्थागत रूप दिया जाए।
- ऑनलाइन शिक्षा में समावेशन, पहुँच और गुणवत्ता के तीनों आयामों को साथ लेकर चलना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. खान, म. अ., विवेक, नबी, म. क., खोजाह, म., एवं ताहिर, म. (2021). स्टूडेंट्स' परसेप्शन टुवर्ड्स ई–लर्निंग ड्यूरिंग कोविड–19 पैंडेमिक इन इंडियारू ऐन एंपिरिकल स्टडी. सस्टेनेबिलिटी, 13(1), 57.
2. चलील, क., होक, म. अ., एवं कुमार, स. (2023). हायर एजुकेशन ड्यूरिंग एंड आफ्टर कोविड–19 इज ऑनलाइन एजुकेशन द न्यू नॉर्मल? इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 5(2), 75
3. यूनिसेफ. (2021). स्कूल क्लोजर्स इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ कोविडरू रिपोर्ट ऑन रैपिड असेसमेंट ऑफ लर्निंग ड्यूरिंग स्कूल क्लोजर्स इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ कोविड–19. यूनिसेफ इंडिया. (UNICEF)
4. यूनिसेफ. (2021). इंडिया कोविड–19 सिचुएशन रिपोटर्रू जनवरीदृअप्रैल 2021. यूनिसेफ.
5. यूनिसेफ डेटा. (2020). कोविड–19 एंड स्कूल क्लोजसर्रू आर चिल्ड्रन एबल टू कंटिन्यू लर्निंग? अ ग्लोबल एनालिसिस ऑफ द पोटेंशियल रीच ऑफ रिमोट लर्निंग पॉलिसीज. यूनिसेफ. (UNICEF DATA)
6. यूनेस्को. (2023). यूनेस्को'ज एजुकेशन रिस्पॉन्स टू कोविड–19. यूनेस्को. (UNESCO)
7. ओईसीडी. (2020). लेसन्स फॉर एजुकेशन फ्रॉम कोविड–19रू अ पॉलिसी मेकर'ज हैंडबुक फॉर मोर रेजिलिएंट सिस्टम्स. ओईसीडी पब्लिशिंग. (OECD)
8. तमिलरसी, सी., एवं कमाक्षी, एस. (2021). इम्पैक्ट ऑफ ऑनलाइन क्लासेज ऑन स्कूल स्टूडेंट्स ड्यूरिंग कोविड–19 पैंडेमिक. स्वाध्यायरू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रांसडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 1(2), 9–17. (sdnbvc.edu.in)

❑❑❑